अध्याय 19

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	आराधना (20 मिनट)	[परमेश्वर की विशेषताएं] परमेश्वर सिद्ध है

मनन।

परमेश्वर सिद्ध है पर शिक्षा दें या पढ़ें।

व्यवस्थाविवरण 10:17–18;व्यवस्था विवरण 16:18–19; भजन संहिता 34:15–16; यशायाह 5:8, 11–12, 18,20–23 **पढें**।

1. परमेश्वर पक्षपात नहीं करता।

परमेश्वर न तो धनी, न शक्तिशाली का और न ही गरीबों को पक्षपात करता है। (लैव्यव्यवस्था 19:15)। परमेश्वर किसी भी जाति में भेद भाव नहीं करता, वरन वह सभी जाति,वर्ग, संस्कृति व समाज के लोगों के साथ मिलता जुलता है। (प्रेरितों 10:28,34–35)।

2. परमेश्वर घूस नहीं लेता।

भजन संहिता 115 हमें सर्तक करते हुए बताता हैं जितने मूर्तिपूजा या मनुष्यों द्वारा बनाये देवताओं की पूजा करते हैं वे बिल्कुल अपने देवताओं के समान हो जाते हैं। उनके देवी देवता भ्रष्ट हैं, क्योंकि उनके लोग चढ़ावा चढ़ाकर अपने प्रति उनके पक्ष को खरीद सकते हैं। मूर्तिपूजक और अपने देवी देवताओं को बनाने वाले भी भ्रष्ट हो जाते हैं, क्योंकि वे भी घूस देकर लोगों से अपने काम करवा लेते हैं। परमेश्वर को कभी घूस देकर नहीं खरीदा जा सकता। कोई भी जन किसी धार्मिक संस्था को दान देकर या रोज किसी धार्मिक रीति रिवाज़ को पूरा करके परमेश्वर के पक्ष या अनुग्रह को खरीद नहीं सकता है। कोई भी जन जीवित परमेश्वर को अपने दृष्टिकोण से नहीं जीत सकता और न ही वह कुछ भी करके परमेश्वर से इस संसार में कोई कार्य करवा सकता है। जीवित परमेश्वर किसी भी प्रकार की घूस को स्वीकार नहीं करता। मनुष्य जीवित परमेश्वर से हेर फेर नहीं कर सकता। जीवित परमेश्वर अपनी शर्तों पर लोगों से रिश्ता बनाता है, लोगों की शर्तों पर नहीं।

3. परमेश्वर कमज़ोर लोगों की सुरक्षा करता है।

इस संसार के बहुत से लोग केवल ' सेहतमन्द लोगों के निर्वाह पर'' या 'सही काम करने वालों के निर्वाह पर' या 'अपने आप के निर्वाह पर ' ही विश्वास करते हैं। वे अनाथों, विधवाओं, बुजुर्गों व कुवांरियों तथा परदेशियों को दबाते व उनका शोषण करते हैं। आधुनिक काल में बाल मज़दूरी, बाल दासत्व व बाल सैनिकों में जोरों से बढ़ौतरी हो रही है। धनी लोग गरीब लोगों की मजदूरी व कामों के बल पर अमीर होते ही जा रहे हैं जबकि गरीब लोग और भी अधिक गरीब हो रहे हैं। करीब नव्वे लाख बच्चे और व्यस्क लोग प्रतिवर्ष भूख व कुपोषण का शिकार होकर मर जाते हैं (जो लगभग 24000 प्रतिदिन है)। उनके देश के बच्चे व उनका देश भी विधवाओं व बुजुर्गों को भूल जाते हैं। और अल्पसंख्यक व परदेसियों पर बहुतायत से सताया जा रहा है।

संसार भर के लोगों के इस अनैतिक व्यवहार के बिल्कुल विपरीत, जीवित परमेश्वर कमजोर लोगों के हक की सुरक्षा करता है। धनी, दबाने वाले व शोषण करने वालों के विपरीत, जीवित परमेश्वर गरीबों,दरिद्र तथा शोषित लोगों के बीच में काम करता है। इस संसार में जिन लोगों के पास पिता नही हैं,वह उन लोगों का स्वर्गीय पिता बन जाता है। जिन लोगों के पास उनकी सुरक्षा करने के लिए पति नहीं है, वह उनकी सुरक्षा करने वाला बन जाता है। वह परदेसियों के लिए विशेष रक्षक बन जाता है। अकेलापन महसूस करने वाले लोगों के लिए वह अच्छा मित्र बन जाता है। जिन लोगों को आलिंगन की आवश्यकता होती है उनको वह आगे बढ़कर बाहों में उठा लेता है (होशे 11:1–4)। जीवित परमेश्वर लोगों की परवाह करता है, खास तौर पर वह ध्यान रखता है कि लोगों के पास खाने के लिए भोजन,पहनने के लिए वस्त्र व रहने के लिए घर हो। परमेश्वर संसार भर के मसीहियों को शोषित व परेशान लोगों तक पहुंचनें के लिए पैरों के रूप में, गरीबों की मदद करने के लिए उन्हें हाथ के रूप में तथा असहाय लोगों को उत्साहित करने व प्रेरित करने के

लिए मुँह के रूप में इस्तेमाल करते हैं। अन्ततः, न्याय के दिन में परमेश्वर संसार में पैदा हुए सभी शोषण करने, दबाव डालने, तथा बिगाड़ करने वालों को दण्ड देगा।

4.परमेश्वर की सुनिश्चित अहमियत व मानदण्ड होते हैं।

परमेश्वर के पास अहमियत व मानदण्ड की आत्मिक व नैतिक पद्धति होती है। परमेश्वर बुराई, गलत बातों, अधर्म, अपवित्र व अभक्ति से बिल्कुल परे है। परमेश्वर के मानदण्ड किसी वस्तु से जुड़े नहीं होते,वे कभी परिस्थितियों पर निर्भर या बदलते मानव युग पर निर्भर करते है। परमेरवर के आत्मिक व नैतिक मानदण्ड सदैव सिद्ध होते हैं। बाइबल के सारे वचन इस तरह से लिखें गये हैं कि उन्हें उनकी मूल अवस्था में उच्चारित किया जाए। वह चाहता है कि सम्पूर्ण मानव जाति उसकी उसे जाने व उसकी इच्छा को समझे। परमेश्वर द्वारा अहमियत दी जाने वाली चीज़ों को उसकी आज्ञाओं व उसके द्वारा मनाही के द्वारा समझा जा सकता है। परमेश्वर की आज्ञाएं व निषेध हर एक संस्कृति व इतिहास के हर काल में एक जैसी ही बनी रहती है। इसलिए परमेश्वर का मानदण्ड हर काल में सिद्धता, भलाई व सत्य का एक निर्धारित बिन्दू है। जो कोई जन परमेश्वर द्वारा ठहराये नियमों आज्ञाओं व निषेध का उल्लंघन करता है, वह वर्तमान में कभी भी शान्ति का अनुभव नहीं करेगा और भविष्य में उसे परमेश्वर की ओर से दण्ड भुगतना पड़ेगा। परमेश्वर दुष्ट का सामना करता है, लेकिन वह धर्मी के साथ रहता है (भजन 34:15–16)। अतः जो कोई परमेश्वर के निर्धारित नियमों व आज्ञाओं का पालन करता है उसका विवेक अच्छा होगा, वह शान्ति का अनुभव करेगा तथा सुरक्षित रहेगा। वे जानते हैं कि जीवित परमेश्वर उनके बारे में क्या सोचता है और वे जानते हैं कि परमेश्वर उनके द्वारा किस प्रकार का व्यवहार चाहता है।

आराधना ।

परमेश्वर की सिद्ध विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए उसकी आराधना करें! प्रत्येक समूह में तीन लोग मिलकर आराधना करें।

3	**बाँटना** (20 मिनट)	[शान्त समय] प्रेरितों के काम 15:1– 18:17

आगे बढ़कर संक्षेप में ***बताएं*** (या अपने नोट्स में से पढ़ें) कि आपने शान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (प्रेरितों के काम 15:1–18:17) से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4.	**शिक्षा** (70मिनट)	[प्रभुता] मसीही प्राथमिकताएं

क. जीवन के पाँच अति महत्वपूर्ण क्षेत्र

1 प्राथमिकता क्या है।

प्राथमिकता जीवन की रूची या ऐसा क्षेत्र है जो सबसे पहले हमारे ध्यान को चाहता है और जो जीवन के बाकि महत्वपूर्ण क्षेत्रों, क्रमों तथा अन्य रूचियों से पहले आता है।

2. जीवन के पांच सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र।

जीवन के पाँच महत्वपूर्ण क्षेत्र निम्नलिखित हैः परमेश्वर के साथ आपका सम्बन्ध, आपका नौकरी(उद्यम, व्यवसाय), आपका परिवार, परमेश्वर के लिए आपकी सेवकाई(सेवा) तथा आपका व्यक्तिगत विकास। परमेश्वर नहीं चाहते कि आप अपना समय व शक्ति को इनमें से केवल एक ही क्षेत्र के लिए खर्च करें। उसकी निगाहों में दूसरे क्षेत्र भी आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं और उन्हें उचित समय, ध्यान और शक्ति मिलनी ही चाहिए! इनमें से प्रत्येक क्षेत्र दूसरे चार क्षेत्रों में भी कार्य करता है। बाइबल बताती है कि इनमें से किसी भी दो क्षेत्रों के बीच सम्बन्ध प्राथमिकताएं हैं।

3. क्या प्राथमिकताए नियत होती है?

बहुत से मसीही विश्वास करते हैं कि मसीही प्राथमिकताएं नियत होती हैं, परन्तु हर एक के जीवन में प्राथमिकताओं का क्रम अलग होता है। कई मसीही सोचते हैं प्राथमिकताओं के क्रम में पहले परमेश्वर, दूसरा परिवार, तीसरा सेवकाई,चौथा

नौकरी और पाँचवा व्यक्तिगत विकास का स्थान होता है। ये मसीही सदैव परमेश्वर की सेवकाई को अपने परिवार से ज्यादा महत्व देते हैं। जबकि दूसरे मसीही विश्वास करते हैं कि प्राथमिकताओं के क्रम में पहला स्थान परमेश्वर, दूसरा सेवकाई, तीसरा नौकरी, चौथा परिवार, और पांचवा व्यक्तिगत विकास का होता है। ये मसीही परमेश्वर की सेवकाई या उनकी नौकरी को बाकि क्षेत्रों से सदैव ऊपर रखते हैं।

4. केवल परमेश्वर ही नियत प्राथमिकता है।

बाइबल भी हमें बताती है कि परमेश्वर हमारे जीवन की प्रथम प्राथमिकता है और परमेश्वर ही इस बात को निर्धारित करते हैं कि आपके जीवन की किस परिस्थिति में किस क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए। कुछ निश्चित परिस्थितियों में परमेश्वर ठहराते हैं कि परिवार हमारी सेवकाई से ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। जबकि कई परिस्थितियों में वह सेवकाई को परिवार से ज़्यादा महत्व देते हैं।

ख. जीवन के पाँच सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बीच सम्बन्ध

किसी विशेष क्षेत्र में सारी बातें समान रूप से महत्वपूण नहीं होती हैं। पांचों सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्रों की अपनी सीमाएं होती हैं। लेकिन हर क्षेत्र में कुछ बातें ऐसी भी होती हैं जिन्हें प्राथमिकता मिलना जरूरी है। यह बहुत जटिल प्रतीत होता है, लेकिन जटिल है नहीं, क्योंकि वास्तव में केवल एक ही प्राथमिकता है और स्वयं परमेश्वर है। बाइबल हमें इन क्षेत्रों के बीच में सम्बन्ध के बारे में बताती है।

1. आपके काम या नौकरी में परमेश्वर के अनुसार क्या महत्वपूर्ण है?

आपके काम या नौकरी में क्या महत्वपूर्ण है?

2 थिस्लुनिकियों 3:10। आपको अपने परिवार व अपने आप की देखभाल करने के लिए **कार्य करना चाहिए।**

1 तीमुथियुस 6:7–8। जब आप अपने जीवन निर्वाह करने की वस्तुओं को कमा लेते हैं–अर्थात भोजन व कपड़ों को, तो आपको **सन्तुष्ट हो जाना चाहिए**।

आपके कामों के लिए परमेश्वर किन सीमाओं को निर्धारित करते हैं?

मरकुस 8:36। अपने काम या भविष्य की चिन्ता में ही सारा समय खर्च करने के द्वारा अपने प्राण का नुकसान न उठायें!

नीतिवचन 23:4–5, धनी होने के लिए परिश्रम न करना, अपने समझ का भरोसा छोड़ना। बुद्धि के साथ सीमित करना कि आप अपना कितना समय व शक्ति को अपने कामों में खर्च कर रहे हैं। अपने जीवन के अन्य क्षेत्रों में खर्च करने के लिए भी अपना समय बचा कर रखें। कहीं ऐसा न हो कि आपके जीवन के अन्य क्षेत्रों को नुकसान उठाना पड़े।

परमेश्वर के साथ आपका व्यक्तिगत सम्बन्ध आपके कामों से किस प्रकार जुड़ा है?

लूका 10:38–42। शान्त समय। अपने कामों को शुरू करने से पहले यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत संगति में समय बिताएं।

निर्गमन 23:12; लैव्य 23:3 ;मरकुस 3:4। विश्राम का दिन। अपने कामों से विश्राम लेने के लिए,ताज़गी प्राप्त करने, दूसरे विश्वासियों के साथ परमेश्वर से मिलने, भले काम करके जीवन बचाने के लिए, सप्ताह में कम से कम एक दिन को अलग करें।

भजन संहिता 127:1–2। निर्भरता । बुद्धि, शक्ति,प्रभाव,तथा अपने कामों के परिणाम के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहें।

नीतिवचन 16:3; कुलुस्सियों 3:23। लक्ष्य। अपने सारे कामों को परमेश्वर के लिए करना मनुष्यों को दिखाने के लिए नहीं। तब वह काम कभी असफल नहीं होगा।

प्रेरितों के काम 5:29। प्राथमिकता। अपने कामों में परमेश्वर के प्रति वफादार रहें, चाहे आपको उसके बीच में अपने स्वामी की बुरी मांगों का विरोध ही क्यों न करना पड़े।

आपकी सेवकाई आपकी नौकरी से किस प्रकार जुड़ी है?

कुलुस्सियों 3:22–4:1। सम्मानजनक कामों को करें व अपने अधिकारियों का आदर करें।

1 तीमुथीयुस 3:7। अपने कामों को निपुणता से करें तथा अपने सहकर्मियों के बीच में अच्छे नाम को कमाएं।

मत्ती 6:31–33। अपने कार्यालय में काम करने के तरीके से परमेश्वर के राज्य व धार्मिकता को आगे बढ़ाएं।

2.परमेश्वर आपके परिवार में किस चीज को महत्वपूर्ण बताते हैं?

आपके परिवार में क्या महत्वपूर्ण है?

कुलुस्सियों 3:18–21। (इफिसियों 5:22–6:4)। रिश्तों के नियम। हर एक परिवार परमेश्वर के द्वारा दिये गये नियमों का पालन करें।

परमेश्वर के साथ आपका व्यक्तिगत सम्बन्ध आपके परिवार के साथ कैसे जुड़ा है?

मत्ती 10:37। प्राथमिकता। अपने परिवार में परमेश्वर के लिए अधिकाई से वफादार रहें, यहाँ तक कि अपने परिवार के सबसे प्रिय के प्रति वफादारी से बढ़कर।

आपका काम आपके परिवार से किस प्रकार जुड़ा है?

2 कुरिन्थियों 12:14; 1तीमुथीयुस 5:4,8। अपने परिवार की सारी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए काम करें।

आपकी सेवकाई आपके परिवार से किस प्रकार जुड़ी है?

व्यवस्थाविवरण 6:5–7। अपने परिवार में बाइबल को पढ़ें और उस पर चर्चा करें तथा उससे प्राप्त सत्य को अपने जीवन में इस्तेमाल करें।

इफिसियों 5:22–33। अपने वैवाहिक सम्बन्ध को मज़बूत बनाये और एक आदर्श बनें।

इफिसियों 6:4। अपने बच्चों की परवरिश परमेश्वर के सिद्धान्तों पर आधारित होकर करें, जिसका अर्थ है बाइबल में प्राप्त सच्चाईयों का इस्तेमाल करते हुए।

लूका 2:52; (इफिसियों 6:1–4)। अपने बच्चों के जीवन के सभी क्षेत्रों का विकास करें।

नीतिवचन 23:22–25। अपने बच्चों को आज्ञाकारिता,आदर करना,सच्चाई, बुद्धि व धार्मिकता की शिक्षा दें।

मरकुस 10:29–30। प्राथमिकता। जब कभी यीशु मसीह आपको अल्प या दीर्घ काल के लिए सेवा करने हेतू बुलाएं तो आज्ञा पालन करें।

1 तीमुथीयुस 3:4–5,12। प्राथमिकता। अपने परिवार का ढंग से प्रबन्ध करना, कलीसिया में प्रबन्ध करने या अगुवाई करने से ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

3. परमेश्वर क्या कहते हैं आपकी सेवकाई में क्या महत्वपूर्ण हैं?

आपकी सेवकाई में क्या महत्वपूर्ण है?

मरकुस 10:45। एक दास बनना। जीवन का सही मतलब, यीशु मसीह की खातिर दूसरों की सेवा करना।

परमेश्वर के साथ में आपका व्यक्तिगत सम्बन्ध आपकी सेवकाई से किस प्रकार जुड़ा है?

यूहन्ना 15:5 । प्राथमिकता। अपने व्यक्तिगत सम्बन्ध को यीशु मसीह के साथ विकसित करें। यह आपकी सेवकाई की गतिविधियों से ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। यदि अपका व्यक्तिगत सम्बन्ध प्रभु यीशु से नहीं है, तो कोई वास्तविक या स्थाई फल नहीं होगा।

कलीसिया के भीतर आपकी सेवकाई क्या है?

यूहन्ना 4:23–24। आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करें।

यूहन्ना 13:14–15। लोगों की सेवा करने के द्वारा परमेश्वर करें,खासतौर पर उन कामों में जो कोई न करना चाहे या न कर पाएं

यूहन्ना 13:34–35। रिश्तों को मजबूत बनाएं, क्योंकि यह करना किसी कार्यक्रम के संचालन करने या गतिविधियों में भाग लेने से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

इफिसियों 4:12–16। चेले बनाना और तैयार करना। अपनी कलीसिया के सभी मसीहियों को यीशु मसीह का चेला बनाएं, और उन्हे विभिन्न प्रकार की सेवकाईयो या सेवा के लिए तैयार करें जिससे मसीह की देह की उन्नति हो।

कलीसिया के बाहर आपकी सेवकाई क्या है?

2 कुरिन्थियों 2:14–16;3:2–3। प्रभाव। ऐसे व्यक्ति बने जो अपने आस पास के लोगों पर लगातार प्रभाव डालता हो।

मत्ती 10:32–33। गवाही देना। मसीह के गवाह बने, सुसमाचार प्रचार करें और दूसरों को बाइबल की सच्चाईयों की शिक्षा दें।

याकूब 1:27; 2:15–17। दया। संसार भर में, गरीबों व दरिद्रों पर दया करने वाली सेवकाई के भाग बने।

4. परमेश्वर आपके व्यक्तिगत विकास के लिए किन बातों को महत्वपूर्ण बताते हैं?

आपके व्यक्तिगत विकास के लिए कौन सी बातें महत्वपूर्ण हैं?

मरकुस 8:34–38। आत्म–इनकार करना : अपना इनकार करें, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाएं और मसीह के पीछे हो लें।
मरकुस 12:30–31; यशायाह 43:4। प्रेमः अपने आप और दूसरों के लिए परमेश्वर की प्रेम में बढ़ें।
भजन 101:3; 141:3–4। आंखें, मुंह और हृदय। अपनी आखों, हृदय और मुँह पर नियन्त्रण रखें।

परमेश्वर आपके व्यक्तिगत विकास से किस प्रकार जुड़े हैं?

भजन संहिता 16:2; 73:25। आत्मिक कल्याणः परमेश्वर को छोड़ और किसी बात की लालसा न करें।
1 तीमुथीयुस 4:7–8। आत्मिक कल्याणः भक्ति का अभ्यास करना शारीरिक अभ्यास (सुडौलता, खेल कूद) से ज्यादा महत्वपूर्ण है।
इफिसियों 5:2। भावनात्मक कल्याणः प्रेम में चलें।
भजन संहिता 34:18। भावनात्मक कल्याणः होने दें कि परमेश्वर आपके टूटे मन (चोट, कमजोरी व जीवन में असफलताओं) की देखभाल करें।
नीतिवचन 9:10। बौद्धिक कल्याणः परमेश्वर का ज्ञान व परमेश्वर पर भरोसा रखना बुद्धि और समय का आरम्भ है।
नीतिवचन 3:5–6; (इफिसियों 5:10,17)। बौद्धिक कल्याणः पता करने का प्रयास करें कि परमेश्वर को क्या भाता है।
1 कुरिन्थियों 6:19–20: शारीरिक कल्याणः अपनी देह, स्वास्थ्य, सुडौलता व अपने रूप के द्वारा महिमा का आदर करें।
1 कुरिन्थियों 15:33:सामाजिक कल्याणः बुरी संगति आपके अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है इसलिए ऐसी संगति से बच कर रहें।
1 पतरस 2:11। नैतिक कल्याण : पापमय लालसाओं से बचे रहें क्योंकि वे आत्मा से लड़ाई करती है।
निर्गमन 31:3– दी 5। योग्यताएंः परमेश्वर द्वारा गयी योग्यताओं का विकास करें और रचनात्मक बनें।
इफिसियों 5:15–16 (मत्ती 25:15)। अवसर (चुनौतियां): परमेश्वर द्वारा प्रदान किये गये अवसरों का भरपूर फायदा उठाएं।
रोमियो 5:3–5; (याकूब 1:2–4)। कष्ट व परेशानियांः चरित्र का निर्माण करें।

कैसे आपकी सेवकाई आपके व्यक्तिगत विकास से जुड़ी होती है?

लूका 16:10। जो कोई थोड़ी बातों में विश्वासयोग्य और वफादार होगा वह बहुत बातों में भी विश्वासयोग्य और वफादार बना रहेगा।
2 कुरिन्थियों 10:18; फिलिप्पियों 2:22। आपके निर्धारित कामों की परख होती है। ग्रहण योग्य ठहरने पर आपकी प्रशंसा होगी।

आपके काम किस प्रकार आपके व्यक्तिगत विकास से जुड़ते हैं?

नीतिवचन 12:3। अटल। दुष्ट (भ्रष्ट) कभी स्थिर नहीं रह सकता, लेकिन कोई धर्मी को अपने स्थान से हिला न पाएगा।

आपका परिवार किस प्रकार आपके व्यक्तिगत विकास से जुड़ता है?

नीतिवचन 15:22; 19:20। बुद्धिः अपने परिवार से सलाह लें और उनकी सलाह पर ध्यान दें।

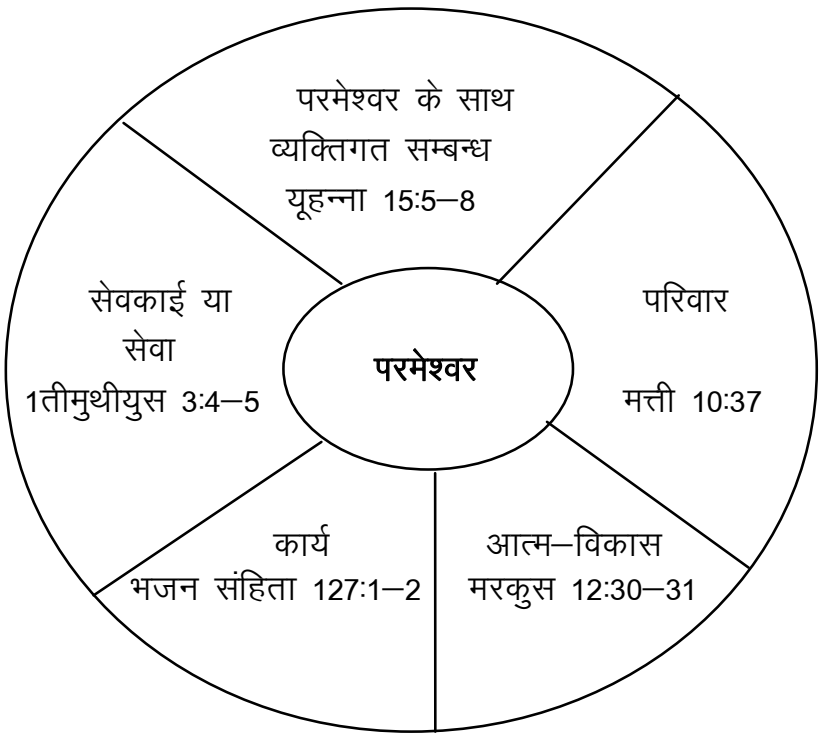
5. परमेश्वर के साथ आपके व्यक्तिगत सम्बन्ध हेतू परमेश्वर किन बातों को महत्वपूर्ण बताते हैं?

यूहन्ना 15:5–8;प्रकाशितवाक्य 2:4–5। मसीह। मसीह को प्रथम स्थान दें और उसमें बने रहें। बाकि बातें टल जाएंगी!
कुलुस्सियों 2:6–7। आज्ञाकारिता। मसीह के रूप में जीयें और मसीह के रूप में बढ़ें।
कुलुस्सियों 3:16; मत्ती 7:24–27। वचन। परमेश्वर के वचनों या प्रकाशनों को बहुतआयत से प्राप्त करें और लगन के साथ उसे अपने जीवन में इस्तेमाल करें।
मत्ती 7:7–8। प्रार्थना। प्रार्थना करना बन्द न करें।
इब्रानियों 10:24–25। संगति। संगति व शिक्षा प्राप्त करने के लिए नियमित तौर पर मिले।
यूहन्ना 15:16। फल लाना। दूसरों के जीवन में मसीह के फल लाने हेतू पहल करें ।

6.जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परमेश्वर सर्वोच्च प्राथमिकता है।

मत्ती 4:10। परमेश्वर की आराधना करें केवल उसी की सेवा करें। उपरोक्त बाइबल की सारी आयते बताती हैं कि परमेश्वर चाहते हैं कि वह आपके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का केन्द्र बिन्दु हो। इस कारण किसी भी प्रकार की प्राथमिकता ने यह निर्धारित नहीं करना चाहिए कि आप किस जगह पर अपना समय व शक्ति खर्च करेंगें। इसके बजाय होने दें कि परमेश्वर निर्धारित करे कि आप किस जगह पर आपकों जीवन देना तथा अपना समय व शक्ति खर्च करनी चाहिए। परमेश्वर पवित्र आत्मा के माध्यम से आपके जीवन में राज्य करना चाहता है।

परमेश्वर आपके जीवन के हर क्षेत्र का सर्वश्रेष्ठ राजा है! आपकी प्राथमिकताओं की सूची ने नहीं, वरन परमेश्वर ने निर्धारित करना चाहिए कि आप किन बातों के लिए अपने प्रतिदिन जीवन, अपने समय और अपनी शक्ति को समर्पित करते हैं।



7. हर एक चीज़ का समय होता है।

आप इन पाँच प्राथमिकताओं व जीवन की अन्य आपातकालीन चीजों के बीच में किस प्रकार सन्तुलन बनाये रखते हैं?

- **गतिविधियाँ और समय।**

बाइबल आपकी गतिविधियों और आपके समय के बीच सम्बन्ध को किस प्रकार से देखती है?

पढ़ें। सभोपदेशक 3:1–8;8:5–6

ध्यान दें। हर एक चीज़ का समय होता है।

सुनिश्चित करें कि आप अपने जीवन के सभी महत्पूर्ण क्षेत्रों को समय व ध्यान दे पाएं।

- **परमेश्वर द्वारा दिये गये कार्यो को पूरा करें।**

बाइबल काम पूरा करने के बारे में क्या कहती है?

पढ़ें

- 2 तीमुथियुस 4:7 ;(प्रेरितों 22:10; 20:24)(पौलुस)
- कुलुस्सियों 4:17;(मरकुस13:34; 1 कुरिन्थियों 3:5;इफिसियों 6:13) (मसीही);
- यूहन्ना 17:4;(यीशु)

ध्यान दें

- पौलुस। उसने प्रभु यीशु द्वारा दिये गये कार्यों को पूरा किया।
- मसीही। परमेश्वर ने प्रत्येक मसीही को एक लक्ष्य दिया है। उसने हर एक मसीही को परमेश्वर द्वारा दिये गये काम को पूरा करने के लिए हर रोज़ 24 घण्टे भी दिये हैं। यह काम कैसे किया जा सकता है?
- यीशु । हालांकि यीशु ने सारे बीमारों को चंगा नहीं कर दिया और न ही उसने सारे संसार को सुसमाचार सुना दिया लेकिन जो काम परमेश्वर पिता ने उसे सौंपा था उसने वह काम पूरा कर दिया। यीशु ने इस काम को कैसे किया?

यीशु मसीह के पास हर दिन के काम के लिए कोई सुनिश्चित सूची नहीं थी। यीशु की रीति के अनुसार, वह प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के दिशा निर्देश का इन्तज़ार करते थे तथा उन निर्देशों को पूरा करने के लिए परमेश्वर से शक्ति मांगा

करते थे। परमेश्वर के साथ प्रतिदिन संगति निभाने के द्वारा, यीशु ने परमेश्वर की इच्छा को तथा उन मामलों के बीच अन्तर पहिचानना सीखा जो उस पर दबाव डालते थे और जो वास्तव में ज़रूरी होते थे। इस तरह से उसने आपातकालीन कामों को किनारे कर के महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा किया।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) [प्रतिक्रिया] **प्रार्थना परमेश्वर के वचनों का प्रतिउत्तर है**

जो कुछ आज आपने सीखा उन बातों का प्रतिउत्तर देने के लिए समूह में एक छोटी सी प्रार्थना करें। या समूह को दो दो या तीन लोगों में बाँटकर उन बातों का प्रतिउत्तर देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें जो आज आपने सीखी हैं।

6	**तैयारी** (2 मिनट) [निर्धारित कार्य] **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह का अगुवा*** : समूह के सदस्यों को यह तैयारी गृह कार्य के रूप में लिखित तौर पर प्रदान करे या उन्हें इस डाउन लोड करने दें।)

1. सर्मपणः चेले बनाने के लिए समर्पित हों।
 किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के जन के साथ 'मसीही प्राथमिकताओं' पर आधारित शिक्षाओं को पढ़ें, सिखाये या प्रचार करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना। प्रेरितों के काम 18:18–21–40 तक रोज एक अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताएं। पसन्दीदा सच्चाई के तरीके का इस्तेमाल करें। लिखें।
3. बाइबल अध्ययन। अगली बाइबल अध्ययन की घर ही में तैयारी करें। इफिसियों 5:22–23। विषयः ''मसीही विवाहकी क्या विशेषताएं होती हैं?'' बाइबल अध्ययन के पांच कदमों वाली पद्धति को इस्तेमाल करें। मुख्य बातों को लिखें।
4. प्रार्थनाः किसी व्यक्ति या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं (भजन 5:3)
5. चेलों को बनाने के सम्बन्ध में अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें आराधना के गीत, शिक्षा तथा इस तैयारी की सामग्री को भी शामिल कर सकते हैं।